Ancient Vedic Mantras and Rituals

Krishan Janmashtami 2025 | कृष्ण जन्माष्टमी दो दिन क्यों पड़ रही है? जानें तिथि, पूजा विधि और महत्व

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाने वाला प्रमुख हिन्दू पर्व है। यह भाद्रपद मास की अष्टमी तिथि को, आधी रात के समय, बड़े हर्षोल्लास और भक्ति भाव से मनाया जाता है। इस दिन मंदिरों में झांकियां, मटकी-फोड़, भजन-कीर्तन और उपवास का आयोजन होता है, और श्रद्धालु भगवान कृष्ण के बाल स्वरूप का पूजन कर सुख-समृद्धि और धर्म की रक्षा का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

पंचांग आधारित कारण

भगवान कृष्ण का जन्म भाद्रपद माह की कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि (Ashtami Tithi) को हुआ था, जो भारतीय हिन्दू चंद्र कैलेंडर पर आधारित है।

2025 में यह अष्टमी तिथि दो दिनों—15 और 16 अगस्त—में फैली हुई है। इसका मतलब है कि 15 अगस्त की देर रात से अष्टमी तिथि आरंभ होगी और 16 अगस्त की शाम तक जारी रहेगी।

2025 में जन्माष्टमी — तारीख और शुभ मुहूर्त

अष्टमी तिथि आरंभ- 15 अगस्त रात ≈ 11:49 PM
अष्टमी तिथि समाप्त - 16 अगस्त शाम ≈ 9:34 PM
निशीथ पूजा (शुभ मुहूर्त) - 16 अगस्त, लगभग 12:04 AM से 12:47 AM

इसलिए, अगर आप संपूर्ण विधि से पूजा करना चाहते हैं, तो 16 अगस्त की मध्यरात्रि का समय (निशीथ काल) सबसे विशेष माना जाता है।

पूजा विधि (पूजन व्रत) — चरण दर चरण

पूर्व-तैयारी

- **घर या मंदिर की सजावट:** बाल गोपाल (कृष्ण बाल स्वरूप) की मूर्ति को साफ-सुंदर बनाकर सजाएँ, झूला, रंग-बिरंगी माला, दीप आदि का प्रबंध करें
- **भोग सामग्री तैयार करें:** पंचामृत, तुलसी, हल्दी, कुंकुम, मिठाई, फल, दूध-दही, और 'छप्पन भोग' (56 प्रकार के प्रसाद)

व्रत (उपवास)

- **फलाहार या निर्जला व्रत:** भक्त फलों, हल्का भोजन या निर्जल व्रत रखते हैं। व्रत तोड़ने का समय जन्माष्टमी तिथि और रोहिणी नक्षत्र समाप्ति के बाद सुबह तय होता है

निशीथ पूजा क्रियाएँ

12:04 AM – 12:47 AM के बीच

- पंचामृत से बालगोपाल की अभिषेक
- नाना तरह की मिठाइयाँ, फल, फूल, दीपक, और धूप-दीपें अर्पण
- भगवद् गीता, विष्णु सहस्रनाम, कृष्णाष्टोत्तरशतनाम, भजन-कीर्तन, आरती

जन्मोत्सव एवं सांस्कृतिक आयोजन

- रासलीला, कृष्ण लीला अंकरित की जाती हैं, कहानी-नाट्य प्रस्तुतियाँ की जाती हैं
- **दही हांडी:** महाराष्ट्र सहित कई जगहों पर, युवक मानव श्रृंखलाएँ बनाकर मटकी फोड़ते हैं, कृष्ण की बाल लीलाओं को स्मरण करते हुए

व्रत तोड़ना (पराण)

- सुबह सूर्योदय के बाद, जब अष्टमी तिथि और रोहिणी नक्षत्र समाप्त हो जाएँ, तब ही व्रत खोलना शुभ माना जाता है

जन्माष्टमी का आध्यात्मिक और संस्कृतिक महत्व

- **राम-भक्ति और धर्म की जीत:** कृष्ण का जन्म अधर्म और अत्याचार के विरुद्ध धर्म की स्थापना के लिए हुआ था
- **भगवद गीता का संदेश:** श्री कृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया, जो आज भी जीवन-दर्शन का प्रमुख स्त्रोत है
- **आध्यात्मिक शुद्धि:** व्रत, पूजा, भक्ति से आत्मा की शुद्धि, पापों से मुक्ति और आशीर्वाद की प्राप्ति होती है

संक्षेप में: महत्वपूर्ण बातें

- शुभ मुहूर्त: निशीथ पूजा का काल 16 अगस्त मध्यरात्रि है — इसे सबसे शुभ माना जाता है

पूजा विधि:

- **पूर्व तैयारी:** मूर्ति, भोग, सजावट
- **व्रत:** निर्जल / फलाहार
- **मध्यरात्रि पूजा:** अभिषेक, भजन-कीर्तन
- **सांस्कृतिक कार्यक्रम:** रासलीला, दही हांडी
- **व्रत तोड़ना:** सुबह सूर्योदय के बाद
- **आध्यात्मिक महत्व:** धर्म की स्थापना, गीता का सन्देश, आध्यात्मिक शुद्धि और सांस्कृतिक उत्सव।

2025 में 15–16 अगस्त को कृष्ण जन्माष्टमी इसलिए दो दिनों में बनी हुई दिखती है क्योंकि हिन्दू पंचांग अनुसार अष्टमी तिथि मध्यरात्रि से शुरू होकर अगले दिन शाम तक रहती है; और स्मार्त और वैष्णव सम्प्रदायों में अंतर की वजह से इसे अलग-अलग दिन माना जा रहा है। परंतु अंततः केन्द्र में रात 12 बजे का निशीथ काल आता है—जो पूजा हेतु सबसे महत्वपूर्ण और शुभ माना जाता है।

भक्ति, श्रद्धा और विधि-निष्ठा के साथ इस जन्मोत्सव को मनाएँ और भगवान कृष्ण के आशीर्वाद से आपके जीवन में प्रेम, शांति और सुख समृद्धि का आगमन हो...!

“जय श्री कृष्ण!”

Related Articles

Krishna Janmashtami Vrat Katha

Shri Krishna Chalisa

THANKS FOR READING

READ MORE RELIGIOUS CONTENT ON

vedicprayers.com

VEDIC PRAYERS

Follow us on: